विषय-सूची

आमुख

प्रस्तावना

अध्याय एक

समदर्शी भगवान्

अध्याय का सारांश

विष्णु हर एक को अतिशय प्रिय

भगवान् की कथाएँ भौतिक कष्ट को दूर करने वाली

कुशल चिन्तक द्वारा भगवान् की उपस्थिति का अनुभव किया जाना

जीव का काल की सीमाओं के भीतर कर्म करना

शिशुपाल का भगवान् के शरीर में लीन होना

बद्धजीव द्वन्द्व में

भगवान् के चिन्तन द्वारा पाप से मुक्ति

नास्तिकों को मोक्ष दुर्लभ

मुनियों द्वारा जय तथा विजय को शाप दिया जाना

अध्याय दो

असुरराज हिरण्यकशिपु

अध्याय का सारांश

हिरण्यकशिपु द्वारा अपने भाई की मृत्यु पर शोक

हिरण्यकशिपु द्वारा भगवान् विष्णु को मारने का व्रत

एकत्रित असुरों को हिरण्यकशिपु का आदेश

असुरों द्वारा विध्वंस कार्य

देवताओं का अदृश्य रूप में पृथ्वी पर विचरण

हिरण्यकशिपु द्वारा अपने भतीजों को सान्त्वना

आत्मा—नित्य तथा अक्षय

राजा सुयज्ञ की कथा

यमराज द्वारा राजा की विधवा पत्नियों को उपदेश

भौतिक सृष्टि: भगवान् का खिलवाड़

पाशबद्ध जीव शरीर से भिन्न

यमराज द्वारा दो कुलिंग पक्षियों की कथा का वर्णन

हिरण्याक्ष की पत्नी तथा माता द्वारा शोक का विस्मरण

अध्याय तीन

अमर बनने की हिरण्यकशिपु की योजना

अध्याय का सारांश

हिरण्यकशिपु द्वारा कठोर तपस्या का शुभारम्भ

देवताओं द्वारा हिरण्यकशिपु की महत्त्वाकांक्षाओं की सूचना ब्रह्मा को दिया जाना

आश्चर्यचकित ब्रह्मा द्वारा हिरण्यकशिपु को सम्बोधन

ब्रह्मा द्वारा हिरण्यकशिपु को पुनर्जीवन दान

हिरण्यकशिपु द्वारा विनीत भाव से प्रार्थना

हिरण्यकशिपु का वर माँगना

अध्याय चार

ब्रह्माण्ड में हिरण्यकशिपु का आतंक

अध्याय का सारांश

ब्रह्मा द्वारा हिरण्यकशिपु को वरदान

हिरण्यकशिपु द्वारा सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का विजित किया जाना

इन्द्र के आवास का ऐश्वर्य

प्रत्येक व्यक्ति द्वारा हिरण्यकशिपु की पूजा

हिरण्यकशिपु—अपनी इन्द्रियों का दास

विश्वपालकों द्वारा विष्णु को आत्मसमर्पण

भगवान् की वाणी—समस्त भय को भगाने वाली

प्रह्लाद महाराज के यशस्वी गुण

प्रह्लाद में भाव लक्षणों का प्राकट्य

हिरण्यकशिपु द्वारा अपने ही पुत्र को सताया जाना

अध्याय पाँच

हिरण्यकशिपु का साधु पुत्र प्रह्लाद

अध्याय का सारांश

असुरों द्वारा शुक्राचार्य को अपना पुरोहित बनाना

प्रह्लाद द्वारा असुरराज को उपदेश दिया जाना

अपने पिता के शत्रुओं के प्रति आज्ञाकारी प्रह्लाद

असुरों के पुरोहितों द्वारा प्रह्लाद को सान्त्वना दिया जाना

प्रह्लाद का अपने शिक्षकों द्वारा प्रताड़न

असुरों को काटने के लिए विष्णु कुल्हाड़े के समान

भक्ति की नौ विधियाँ

हिरण्यकशिपु का अपने पुत्र पर क्रुद्ध होना

भौतिकतावादियों द्वारा चर्वित का बारम्बार चर्वण

हिरण्यकशिपु द्वारा प्रह्लाद को मार डालने का आदेश

असुरों द्वारा प्रह्लाद का सताया जाना आरम्भ

प्रह्लाद अपने पिता के उत्पीड़नों से अप्रभावित

प्रह्लाद द्वारा अपने सहपाठियों को उपदेश

अध्याय छह

प्रह्लाद द्वारा अपने असुर सहपाठियों को उपदेश

अध्याय का सारांश

हर बालक को कृष्णभावनामृत की शिक्षा

सभी योनियों में शारीरिक सुख की उपलब्धि

आर्थिक विकास व्यर्थ

आप जीवन कैसे नष्ट करें

पारिवारिक स्नेह का बन्धन

धन मधु से भी मधुर

सर्वशक्तिमान जिह्वा तथा जननांग

शिक्षित कुत्ते-बिल्लियाँ

स्त्रियों के हाथ के नाचने वाले कुत्ते

नास्तिकों को भगवान् के अविद्यमान होने की प्रतीति

भक्तों के लिए कुछ भी अनुपलब्ध नहीं

कृष्ण की शरण में जाना दिव्य

दिव्य ज्ञान को समझ पाना कठिन

अध्याय सात

प्रह्लाद ने गर्भ में क्या सीखा

अध्याय का सारांश

देवताओं द्वारा असुरों को लूटा जाना

नारद द्वारा अजन्मे नायक प्रह्लाद की रक्षा

गर्भ में ही प्रह्लाद द्वारा नारद से उपदेश सुनना

भगवान् तथा हम दोनों ही चेतन जीव

आत्मा को कैसे निकाला जाये

सभी धीर पुरुषों द्वारा आत्मा की खोज आवश्यक

दूषित बुद्धि की शृंखला

प्रामाणिक गुरु को स्वीकार करना और उसकी सेवा करना

नरक जाने में काफी उद्यम की आवश्यकता

सुख के प्रयासों से सदैव दुख की प्राप्ति

आज के कर्मों से भावी शरीर का बनना

सर्वत्र कृष्ण का दर्शन करना चरम लक्ष्य

अध्याय आठ

भगवान् नृसिंहदेव द्वारा असुरराज का वध

अध्याय का सारांश

हिरण्यकशिपु द्वारा अपने पुत्र प्रह्लाद को मार

डालने का निश्चय

प्रह्लाद द्वारा अपने पिता को उपदेश

यदि भगवान् सर्वत्र है, तो मुझे क्यों नहीं दिखता

ख भे से भगवान् नृसिंहदेव का प्रकट होना

भगवान् नृसिंहदेव के स्वरूप का वर्णन

भगवान् द्वारा हिरण्यकशिपु का विदीर्ण किया जाना

देवताओं द्वारा भगवान् नृसिंहदेव की स्तुति

अध्याय नौ

प्रह्लाद द्वारा नृसिंहदेव का शान्त किया जाना

अध्याय का सारांश

प्रह्लाद का नृसिंहदेव के निकट जाना

प्रह्लाद द्वारा भगवान् की स्तुति

चांडाल भी भक्त बनकर महान् हो जाता है

भगवान् का अपनी इच्छा से अवतरित होना

तथाकथित उपचार रोगों से भी निकृष्ट

विज्ञानी तथा राजनीतिज्ञ कभी हमें बचा नहीं सकते

भावी सुख केवल मृगमरीचिका

हमारा पहला कर्तव्य—गुरु की सेवा करना

भगवान् की योगनिद्रा

इस युग में भगवान् अपना प्रभाव नहीं दिखलाते

इन्द्रियाँ सपत्नियों के समान

मूर्खों तथा धूर्तों को बचाने में सहायक बनें

एकान्त में ध्यान करने की भर्त्सना

कामवासना को सहन करने से काफी कष्टों से बचाव

भगवान् द्वारा अपना क्रोध त्यागना

भक्तों को भौतिक लाभ अस्वीकार्य

अध्याय दस

भक्तप्रवर प्रह्लाद

अध्याय का सारांश

भक्तगण भौतिकतावादी जीवन से भयभीत

भौतिक लाभ के लिए भगवान् की सेवा

कृष्ण: हमारे प्राकृतिक स्वामी

भगवान् द्वारा असुरों पर राज्य करने का प्रह्लाद को आदेश

महान् भक्तगण सम्पूर्ण राष्ट्रों को शुद्ध करने वाले

ब्रह्मा द्वारा भगवान् नृसिंहदेव की स्तुति

जय तथा विजय के तीन जन्म

मनोयोग से सुनने वालों को वैकुण्ठ प्राप्ति

परब्रह्म व्यक्ति हैं

असुरों में प्रतिभाशाली मय दानव

आपन सोची होत नहिं

अध्याय ग्यारह

पूर्ण समाज: चातुर्वर्ण

अध्याय का सारांश

हमारे नित्य वृत्तिपरक कर्तव्य

मनुष्य के तीस के गुण

बुद्धिजीवी, प्रशासक, व्यापारिक तथा श्रमिक वर्ग

साध्वी स्त्रयाँ: सामाजिक आवश्यकता

समाज का विभाजन कैसे ?

अध्याय बारह

पूर्ण समाज: चार आध्यात्मिक वर्ग

अध्याय का सारांश

ब्रह्मचारी जीवन: गुरु के संरक्षण में रहना

स्त्रियाँ अग्नि के तुल्य और पुरुष घृत सदृश

वैदिक ज्ञान को समझना ही असली शिक्षा

वानप्रस्थ जीवन, मृत्यु की तैयारी

अध्याय तेरह

सिद्ध पुरुष का आचरण

अध्याय का सारांश

संन्यास आश्रम

संसारी साहित्य न पढ़ें

सिद्ध पुरुष से प्रह्लाद की बातचीत

मनुष्य ही अपने अगले शरीर का चुनाव करने में समर्थ

इन्द्रियभोग काल्पनिक

तीन तरह के ताप

मधुमक्खी तथा अजगर श्रेष्ठ शिक्षक

ज्ञाता मोह से दूर

अध्याय चौदह

आदर्श पारिवारिक जीवन

अध्याय का सारांश

गृहस्थों को मुक्तिलाभ किस तरह हो

सादा जीवन उच्च विचार

पशुओं से पुत्रवत् व्यवहार

पत्नी के शरीर का असली मूल्य

प्रसाद वितरण

इस्कॉन केन्द्रों से हर व्यक्ति लाभान्वित

प्रत्येक वस्तु का कृष्ण को अर्पित किया जाना

अध्याय पन्द्रह

सभ्य मनुष्यों के लिए उपदेश

अध्याय का सारांश

भगवान् तथा उनके भक्तों को भोजन अर्पित करना

धर्म तथा भोजन के लिए पशुओं की हत्या

छद्म धर्म की पाँच शाखाएँ

आर्थिक प्रयास से परे कैसे जाया जाय

लालच: निर्दय मालिक

गुरु: जीवन की सबसे बड़ी सम्पत्ति

योग विधि

आध्यात्मिक नियमों का तोड़ना असह्य

गुरु की कृपा

स्वर्गलोक में क्यों नहीं रहा जा सकता?

वास्तविकता क्या है?

चरम स्वार्थ

नारद मुनि के पूर्व जीवन

कृष्ण का पाण्डवों के साथ सामान्य मनुष्य की तरह रहना

परिशिष्ट

लेखक परिचय